कुमार जीवन - 13

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ जितना नालेजफुल उतना ही पावरफुल और सक्सेसफुल होना चाहिए। **नालेजफुल की निशानी यह दिखाई देगी कि उनका एक एक शब्द पावरफुल होगा और हर कर्म सक्सेसफुल होगा।** अगर यह दोनों रिज़ल्ट कम दिखाई देती हैं तो समझना चाहिए कि नालेजफुल बनना है। जबकि आजकल आत्माओं द्वारा जो अधुरी नालेज प्राप्त करते हैं उन्हों को भी अल्पकाल के लिए सफलता की प्राप्ति का अनुभव होता है। तो सम्पूर्ण श्रेष्ठ नालेज की प्राप्ति प्रत्यक्ष प्राप्त होने का अनुभव भी अभी करना है। ऐसे नहीं समझना कि इस नालेज की प्राप्ति भविष्य में होनी है। नहीं। **वर्तमान समय में नालेज की प्राप्ति-अपने पुरुषार्थ की सफलता और सेवा में सफलता का अनुभव होता है। सफलता के आधार पर अपनी नालेज को जान सकते हो।** तो भट्ठी में आये हो चेक करने और कराने के लिए कि कहाँ तक नालेजफुल बने हैं?

➳ _ ➳ (1) :- **कोई भी पुराने संकल्प वा संस्कार दिखाई न दें। इतना त्याग सीखना है।** (2) :- **मस्तक अर्थात् बुद्धि की स्मृति वा दृष्टि से सिवाए आत्मिक स्वरूप के और कुछ भी दिखाई न दे वा स्मृति में न आये। ऐसे निरन्तर तपस्वी बनना है।** (3) :- **जिस भी संस्कार वा स्वभाव वाले चाहे रजोगुणी, चाहे तमोगुणी आत्मा हो। संस्कार वा स्वभाव के वश हो, आप के पुरुषार्थ में परीक्षा के निमित्त बनी हुई हो लेकिन हर आत्मा के प्रति सेवा अर्थात् कल्याण का संकल्प वा भावना उत्पन्न हो। ऐसे सर्व आत्माओं का सेवाधारी अर्थात् कल्याणकारी बनना है।** तो अब समझा, त्याग क्या सीखना है? तपस्या क्या सीखनी है और सेवा भी कहाँ तक करनी है? इनकी महीनता का अनुभव करना है। **हर पुरुषार्थ में फलीभूत वह हो सकता है जिसमें ज्ञान और धारणा के फल लगे हुए हो।**

➳ _ ➳ जैसे अभी सभी के सामने ब्रह्माकुमार प्रसिद्ध दिखाई देते हैं। दूर से ही जान जाते हैं कि यह ब्रह्माकुमार है। **अब ब्रह्माकुमार के साथ-साथ तपस्वी कुमार दूर से ही दिखाई पड़ो, ऐसा बनकर जाना है। वह तब होगा जब मनन और मगन - दोनों का अनुभव करेंगे।** जैसे स्थूल नशे में रहने वाले के नैन-चैन, चलन दिखाई देते हैं कि यह नशे में है। **ऐसे ही आपके चलन और चेहरे से ईश्वरीय नशा और नारायणी नशा दिखाई पड़े। चेहरा ही आपका परिचय दे।** जैसे कोई के पास मिलने जाते हैं तो परिचय के लिए तो अपना कार्ड देते हैं ना। इसी रीति से आप का चेहरा परिचय कार्ड का कर्त्तव्य करे। समझा? **(19.04.1971)**

➢➢ ग्यानी तू आत्मा अर्थात

➳ _ ➳ ज्ञान में समाये रहना

→ जीवंत सत्य की अनुभूति होना

- जानना
- मानना
- स्वरुप बनना

➳ _ ➳ ज्ञान के सागर में समाये रहना

➳ _ ➳ इच्छा मातरम् अविध्या स्थिति का अनुभव

→ सर्व प्राप्ति स्वरुप का अनुभव

→ अब कुछ जानना बाकी नहीं रहा

→ अब कुछ पाना पाकी नहीं रहा

→ अब कुछ देखना बाकी नहीं रहा

→ वाह रे मैं ब्राह्मण आत्मा

- ऐसी मन की सूक्षम आवाज़ उन्हें सुनायी देगी

→ वह रे मेरा भाग्य

➳ _ ➳ ड्रामा के हर सीन में कल्याण दिखाई दे

→ अकल्याण कुछ है ही नहीं

➳ _ ➳ धन्यवाद उन सभी आत्माओं को

→ जो हमारे रास्ते में विघन डालने के निमित बनते हैं

- तभी तो हम शक्तिशाली बनेंगे

➳ _ ➳ चीज़ें जो नहीं होनी चाहिए

→ नाम मान शान के लेवता / मंगता नहीं होंगे

→ “क्या, क्यों” चिल्लाने वाले नहीं होंगे